Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण चिन्तन

डॉ० सुजीत कुमार
असि० प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
इटावा,उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 101-105
Publication Issue :
January-February-2021
Article History
Accepted : 02 Feb 2021
Published :15 Feb 2021

सारांश– आज के औद्योगिक युग में बढ़ते हुए प्रदूषण की समस्या को हम रामायण कालीन व्यवहारों को अपनाकर अपने पर्यावरण को फिर से हरा भरा एवं नदी को जल से पूरित तथा पशु पक्षियों को अपना सहयोग देने में एक सफल भूमिका निभा सकते है।

मुख्यशब्द–रामायण, महर्षि वाल्मीकि, पर्यावरण, संस्कृत, साहित्य, भारतीय, चिन्तन।

समस्त ब्रह्माण्ड में चारों तरफ से आच्छादित करने वाला तत्त्व पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण का पारम्परिक नाम प्रकृति है। संस्कृत साहित्य में पर्यावरण को प्रकृति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। 'परितः आवृणोति इति पर्यावरणम्'– अर्थात् जो चारों ओर से आवृत करता है पर्यावरण कहलाता है। परि तथा आ उपसर्गपूर्वक वृञ् आवरणे धातु से ल्युट् प्रत्यय करने पर पर्यावरण शब्द संस्कृत में पर्यावृत्ति और परिवेष्टन अर्थ में प्रयुक्त है।

भारतीय चिन्तन में पर्यावरण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है, जितना कि मानव धरा का इतिहास। प्रकृति के क्रिया–कलापों की विविध गतिविधियों का उल्लेख संस्कृत साहित्य के आदि स्रोत वेदों में वर्णित है। प्रकृति की क्रिया–कलाप वैज्ञानिक नियमों पर आधारित होने के कारण प्रकृति के नियमों का उलंघन विनाश को आमंत्रित करता है। हमारी पृथ्वी पर्यावरणीय तत्त्वों से निर्मित है। वेदों में विभिन्न सूक्तों में प्रकृति की महत्ता को दर्शाया गया है।

ऋग्वेद के सूक्तों में अग्नि, सृष्टि, वर्षा आदि के स्वरूप एवं कार्यों का विस्तृत विवेचन किया गया है। अथर्ववेद में पृथ्वी सूक्त का वर्णन है जिसमें विविध औषधियों को बताया गया है। इसी वेद में 'यस्या हृदयं परमे व्योमन्'। अर्थात् जैसे हृदय की धड़कन पर प्राणी का जीवन निर्भर करता है उसी प्रकार अन्तरिक्ष की ही सुरक्षा में पृथ्वी और पर्यावरण की सुरक्षा निहित है।

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण महाकाव्य अपने समय में व्याप्त देशकाल के परिवेश को पर्यावरण के रूप में प्रस्तुत करता है। रामायण का उद्‌गम पर्यावरण की उस मनोहर छटा से पृथक् नहीं है, जहाँ प्राकृतिक दृश्य को देखकर स्वतः वाल्मीकि के मुख से निःसरित होता है–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत् क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ अपने राज्य की सीमाओं का विवरण देते हुए कहते है कि जहाँ तक सूर्य का चक्र घूमता है वहाँ तक सारी पृथ्वी मेरे अधिकार में है। सीता की खोज में सभी वानरों एवं यूथस्वामियों के चले जाने पर श्री रामचन्द्र का सुग्रीव से यह कहना कि तुम समस्त भूमण्डल के स्थानों का परिचय कैसे जानते हो[१]।

वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड के १५वें सर्ग में पर्यावरण का बहुत ही मनोरम वर्णन, राज्याभिषेक की तैयारी के समय किया गया है। राज्याभिषेक में अनेक सामग्री के एकत्रित हो जाने पर, अनेकों नदियाँ, पवित्र जलाशय कूप और सरोवर तथा जो पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ है, ऊपर की ओर प्रवाह वाले जो सरोवर है तथा दक्षिण और उत्तर की ओर बहने वाली जो (गण्डकी व शोणभद्र) नदियाँ है जिनमें दूध के समान निर्मल जल भरा रहता है। इसके अलावा समस्त समुद्रों से भी लाया हुआ जल वहाँ संग्रह करके रखा गया था, इसके अतिरिक्त दूध, दही, घी, मधु, लावा, कुश, फूल, आठ सुन्दर कन्या, मदमत्त हाथी और दूध वाले वृक्षों के पल्लवों से ढ़के हुए सोने चाँदी के जल से पूर्ण कलश भी वहाँ विराजमान थे, जो उत्तम जल से भरे होने के साथ पद्‌म और उत्पलों से संयुक्त होने के कारण शोभायमान हो रहे थे[२]।

राम अयोध्याकाण्ड में देवी सीता को वन में न ले जाने के लिए वन के पर्यावरण का वर्णन करते हुए कहते है कि वन में जो नदियाँ होती है उनके भीतर ग्राह निवास करते है, उनमें कीचड़ अधिक होने के कारण उन्हे पार करना अत्यन्त कठिन होता है इसके अलावा वन में मतवाले हाथी सदा घूमते रहते है। वहाँ मन को वश में रख कर वृक्षों के स्वतः गिरे हुए फलों के आहार पर ही दिन रात सन्तोष करना पड़ता है। पर्वतों से गिरने वाले झरनों के शब्द को सुनकर उन पर्वतों की कन्दराओं में रहने वाले सिंह दहाड़ने लगते है।

सुग्रीव के दक्षिण दिशा का परिचय देते हुए वहाँ के प्रकृति का वर्णन करते हुए यह कहते है कि लंका को लाँघकर आगे बढ़ने पर सौ योजन विस्तृत समुद्र में एक पुष्पितक नामक पर्वत है, वह चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान है तथा समुद्र के जल में गहराई तक घुसा हुआ है। वह अपने विस्तृत शिखरों से आकाश में रेखा खींचता हुंआ सा सुशोभित होता है।

पर्यावरण का एक अनोखा वर्णन उस समय का है जब रावण अपनी बहन शूपर्णखा की बातें सुनी और सीता हरण के निमित्त तैयार होकर इच्छानुसार रथ पर आरूढ़ होकर, रावण पर्वत युक्त समुद्र के तट पर पहुँचकर उसकी शोभा देखने लगा, सागर का वह किनारा नाना प्रकार के फल–फूल वाले सहस्रों वृक्षों से व्याप्त था, चारों ओर मङ्‌गलकारी शीतल जल से भरी हुई पुष्करिणियाँ और वैदिकाओं से मण्डित विशाल आश्रम उस सिन्धु तट की शोभा

बढ़ा रहे थे[३]। इसके अलावा कहीं कदलीवन और कहीं नारियल के कुञ्ज शोभा दे रहे थे। साल, ताल, तमाल तथा सुन्दर फुलों से भरे हुए दूसरे वृक्ष तट प्रान्त को अलंकृत कर रहे थे[४]।

जटायु उस समय सो रहे थे, उसी अवस्था में उन्होने सीता की वह करुण पुकार सुनी, सुनते ही तुरंत आँख खोलकर उन्होने विदेह नन्दिनी सीता तथा रावण को देखा[५]। जटायु के आक्रमण से रावण ने सीता को छोड़ दिया और जटायु को मारने लगा। इससे यह पता चलता है कि पशु–पक्षी भी कितना सजग एवं सचेत रहते थे और समय आने पर वे प्राणों की रक्षा भी करते थे। राम सुग्रीव से मित्रता कर वर्षा काल आ जाने पर राम लक्ष्मण दोनों ने उसी प्रस्रवण पर्वत पर एक मास बिताया।

पर्यावरण का एक उदाहरण अयोध्याकाण्ड में है जिसमें वाल्मीकि यह बताते है कि उस समय गंगा का जल इतना पवित्र एवं शुद्ध था कि देवता, दानव, गन्धर्व और किन्नर उन शिवस्वरूपा भागीरथी की शोभा बढ़ाते है। नागों और गन्धर्वों की पत्नियाँ उनके जल का सदा सेवन करती है। गंगा के दोनों तटों पर देवताओं के सैकड़ो पर्वतीय क्रीड़ास्थल है। उनके किनारे देवताओं के बहुत से उद्यान भी है[६]। गंगा नदी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए वाल्मीकि कहते है कि हंसो और सारसों के कलरव वहाँ गूजते रहते है, चकवे उस देवनदी की शोभा बढ़ाते हैं। सदा मदमत्त रहने वाले विहंगम् उनके जल पर मँडराते रहते है। वे उत्तम शोभा से सम्पन्न है, किन्तु आज गंगा का जल जीव जन्तुओं के लिये भी उपयोगी नहीं रह गया है।

गोदावरी नदी से राम के पूछने पर की सीता कहाँ है, गोदावरी ने दुरात्मा रावण के उस रूप और कर्म को याद करके भय के मारे गोदावरी नदी ने वैदेही के विषय में श्रीराम से कुछ नहीं कहा[७]। ऋषि वसिष्ठ कैकेयी से कहते हैं कि कैकेयी तु आज ही देखेगी कि वन को जाते हुए श्रीराम के साथ पशु, पक्षी, सर्प और मृग भी चले जा रहे हैं औरों की बात ही क्या वृक्ष भी उनके साथ जाने को उत्सुक है[९]। पर्यावरण का एक मार्मिक दर्शन हमें अयोध्याकाण्ड के ०४/४०/१८–१६ में मिलता है जब राम लक्ष्मण सीता वन की ओर प्रस्थान करते हैं तब उस समय समस्त पुरवासी और सैनिक दर्शक रूप में आये। बाहरी लोगों को भी मूर्च्छा आ गयी, उस समय सारी अयोध्या में महान कोलाहल मच गया सब लोक व्याकुल होकर घबरा उठे। मतवाले हाथी श्रीराम के वियोग से कुपित हो उठे और इधर–उधर भागते हुए घोड़ों के हिनहिनाने एवं उनके आभूषणों के खनखनाने की आवाज सब ओर गूंजने लगी। अयोध्यापुरी के आबाल वृद्ध सब लोग अत्यन्त पीड़ित होकर श्रीराम के पीछे दौड़े जैसे धूप से पीड़ित हुए प्राणी पानी की ओर भाग जाते है[६]।

अयोध्याकाण्ड में वन में जाते समय राम को देख रनवास की स्त्रियों का विलाप और उस दिन अहोरात्र बन्द हो गया, गृहस्थों के घर भोजन नही बना, प्रजा ने कोई काम नही किया। सूर्यदेव अस्ताचल को चले गये। हाथियों ने मुँह में लिया हुआ चारा छोड़ दिया, गौओ ने बछड़ों को दूध नहीं पिलाया और पहले पहल पुत्र को जन्म देकर भी कोई माता प्रसन्न नही हुई। त्रिशंकु, मंगल, गुरु, वुद्ध तथा अन्य समस्त ग्रह शुक्र, शनि आदि रात में वक्र गति से चन्द्रमा के पास पहुँचकर दारुण होकर स्थित हो गये।

अयोध्याकाण्ड ०२/४५/३०–३२ के सर्ग में राम को वन जाते समय ब्राह्मण समुदाय राम को रोकते हुए कहते है कि हे राम संसार के स्थावर जंगल, सभी प्राणी आपको रुकने के लिए कह रहे है। वृक्ष, पशु, पक्षी, तमसा नदी अपनी अपनी क्रियाओं से आपको रोक रही है।

वाल्मीकि रामायण के ०२/५४/३० अयोध्याकाण्ड में पर्यावरण का एक उत्तम उदाहरण है कि जो व्यक्ति उस चित्रकूट पर्वत का दर्शन कर लेता है, उसके कल्याणकारी पुण्य कर्मो का फल पा लेता है, और उसका कभी पाप कर्म में मन नहीं लगता, अतः उस समय पर्वतादि का कितना महत्त्व होता था, और उस चित्रकूट पर्वत का महत्त्व यह बताता हैं कि वहाँ बहुत से ऋषि जिनके सिर के बाल वृद्धावस्था के कारण सफेद हो गये थे, सैकड़ों वर्षों तक तपस्या करके स्वर्ग लोक को चले गये[१०]।

वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण संरक्षण का एक उपाय भी हमें मिलता है। भरत के द्वारा राजा दशरथ का श्राद्धकर्म करने के बाद भाई राम को राजा बनाने के लिए, वन में जाते समय अनेक अनुचरों द्वारा रास्ता साफ करना झाड़ी आदि साफ करना तथा जहाँ पर वृक्ष नहीं थे वहाँ कुछ लोगों ने वृक्ष भी लगाये[११], और भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचने पर ऋषि के द्वारा आतिथ्य सत्कार विधिपूर्वक करते हुए ऋषि के तेज से बेल के वृक्ष मृदंग बजाते है, बहेड़े के वृक्ष शम्या नामक ताल देते है और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे। तदन्तर, देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए[१२]।

राम लक्ष्मण को पंचवटी का दृश्य दिखाते हुये उसकी सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहते है कि स्थान स्थान पर सोने चाँदी तथा ताँबे के समान रंग वाले सुन्दर गैरिक धातुओं से उपलक्षित ये पर्वत ऐसे प्रतीत हो रहे है मानों झरोखे के आकार में की गयी नीले पीले और सफेद आदि रंगों की उत्तम शृंगार रचनाओं से अलंकृत हाथी शोभा पा रहे है[१३]। पर्यावरण का एक बहुत ही वीभत्स्वरूप देखने को मिलता है जब श्रीराम ने खर व दूषण के द्वारा युद्ध करने पर अनेकों राक्षसों के द्वारा मारे जाने पर उस समय वहाँ रक्त और मांस के कीचड़ जम गया। अतः महाभयंकर वन नरक के समान प्रतीत होने लगा[१४]।

अतः स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण अध्ययन को मानवीकरण का एक रूप माना है। रामायणकालिक नदी को पवित्र मानकर उनका यथा–समय विधि पूजन होता था और वे नदियाँ पवित्र मानकर उनका अनैतिक तरीके से उपयोग वर्जित था और नदियों का जल ही वर्षा का कारण होता था। वैसे भी नदी को उस समय एक देवता के रूप में मानकर ही उनका सेवन व सुरक्षा की जाती थी, किन्तु अब नदी को एक जल स्रोत का साधन मानकर अन्धाधुन्ध अनैतिक उपयोग से प्रदूषण फैल रहा है। रामायण में नदी को देवी के रूप में वर्णित किया गया है और राम भी नदी के दर्शन को अपना सौभाग्य मानते हैं और नदी पार करने के लिए उनसे प्रार्थना भी की। उस समय नदी व वृक्ष पशु व पक्षी सारा स्थावर जङ्गम् की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। पशु पक्षी को भी सुरक्षा एवं दैव रूप में मानकर किसी न किसी देवता से सम्बन्धित कर उनकी रक्षा करते थे। वे भी उसी तरह मानव से ताल मेल बनाये रखते थे। आज के युग में नदी को एक जल, वृक्ष को एक मात्र उद्योग एवं पशु को एक

आहार के रुप में ग्रहण की प्रवृत्ति हो गयी है जो रामायण युग में कहीं नही था। आज के औद्योगिक युग में बढ़ते हुए प्रदूषण की समस्या को हम रामायण कालीन व्यवहारों को अपनाकर अपने पर्यावरण को फिर से हरा भरा एवं नदी को जल से पूरित तथा पशु पक्षियों को अपना सहयोग देने में एक सफल भूमिका निभा सकते है।

सहायक ग्रन्थ सूची

१. वाल्मीकि रामायण ०४/४६/०१

२. वाल्मीकि रामायण ०२/१५/०६–०८

३. वाल्मीकि रामायण ०३/३५/११–१२

४. वाल्मीकि रामायण ०३/३५/१३

५. वाल्मीकि रामायण ०३/५०/०१

६. वाल्मीकि रामायण ०२/५०/१४–१५

७. वाल्मीकि रामायण ०३/६४/०६

८. वाल्मीकि रामायण ०२/३७/३३

९. वाल्मीकि रामायण ०२/४०/१८–२०

१०. वाल्मीकि रामायण ०२/५४/३०–३१

११. वाल्मीकि रामायण ०२/८०/७

१२. वाल्मीकि रामायण ०२/९१/४९–५०

१३. वाल्मीकि रामायण ०३/१५/१५

१४. वाल्मीकि रामायण ०३/२६/३६